REVIEW OF RESEARCH

# गुरूकुल आश्रम व्यवस्था आधारित विद्यालय :एक वैयक्तिक अध्ययन

टेसू भाटी[1] , डॉ. कुसुमलता[2]

[1]शोधार्थी राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर.
[2]प्राचार्या , संत कबीर टी.टी.कॉलेज, दूदू जयपुर.

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

## शोध सार (Abstract)

प्रस्तुत शोध प्राचीन गुरूकुल आश्रम व्यवस्था आधारित विद्यालय का एक वैयक्तिक अध्ययन है। इस अध्ययन हेतु राजस्थान में संचालित विभिन्न संस्कृत विद्यालयों में से चुरू जिले में स्थित इस आश्रम पद्वति आधारित विद्यालय ऋषिकुल ब्रह्मचर्य आश्रम को सोद्देश्य न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। दत्त संकलन हेतु स्वनिर्मित साक्षात्कार प्रश्नावली व अवलोकन का उपकरण के रूप में प्रयोग किया गया। प्राप्त प्रदत्तों से वहाँ के शैक्षिक उद्देश्यों व इस प्रणाली का भावी जीवन में उपयोगिता का अध्ययन कर तार्किक समालोचनात्मक विश्लेषण किया गया। प्रस्तुत शोध के परिणाम स्पष्ट करते है कि प्राचीन आश्रम व्यवस्था आधारित ये विद्यालय प्राचीन शैक्षिक उद्देश्यों व प्रणाली के साथ–साथ नवीन प्रणाली को भी समाहित करते है। तथा बालकों को सामान्य शिक्षा के साथ–साथ वैदिक कर्मकांडीय ज्ञान व पांडित्य प्रशिक्षण भी प्रदान करते है जिसका वे अपने भावी जीवन में पूर्ण अथवा आंशिक रूप से व्यवसायिक जीवन में भी प्रयोग कर सकते है।

**प्रस्तावनाः–**

भारत के प्राचीन कालीन मुनियों एवं महर्षियों ने सभ्यता के ऊषा काल में शिक्षा के महत्व को समझ लिया था कि शिक्षा ही व्यक्ति, मानव–जाति, समाज एवं देश के कल्याण का एकमात्र व सर्वोत्कृष्ट साधन है। इसी दृष्टिकोण से अनुप्राणित होकर शिक्षा की समुचित व्यवस्था की थी।स्वतत्रंता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय शैक्षिक व्यवस्था में अनेक सकारात्मक परिवर्तन किए गए है। जिन्होंने भारतीय जनमानस को लाभान्वित करते हुए राष्ट्र को प्रगति के पथ पर अग्रसर किया है।

वर्तमान शिक्षा बालक को जीवन के मूल स्वरूप से परिचित कराने में असमर्थ है। आज का युवा अपनी शिक्षा पूर्ण कर लेने के पश्चात् भी जीवन से जुडे महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर दे पाने में अक्षम है यथा जीवन क्या है? जीवन का उद्देश्य क्या है? उत्तम जीवन शैली क्या है? हमारे मूल्यों का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है इत्यादि। शिक्षा अपने इस रूप में अपूर्ण व एकांगी ही नजर आती है। जबकि वास्तविक रूप में शिक्षा जीवन का सम्पूर्ण ज्ञान है। इसी शिक्षा की गुणवत्ता व सम्पूर्णता के कारण ही 'विश्व गुरू' का दर्जा प्राप्त हुआ है। प्राचीन भारतीय वैदिक शिक्षा व्यवस्था जैसी गुणवत्ता व समपूर्णता की कोई तुलना नहीं है। यह इस देश के नागरिकों का दुर्भाग्य ही है कि उस ज्ञान गुरू की संतान होने पर भी इस देश की संस्कृति से अनजान है। स्वतंत्रता पश्चात् की शैक्षिक व्यवस्थाने भारतीय संस्कृति की ही सर्वाधिक उपेक्षा की है।

शिक्षा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्देश्य भारतीयों को उनकी प्राचीन संस्कृति की महानता से परिचित कराना है। उनके गौरवशाली भूतकाल से परिचित कराना तथा उनके मनों में संस्कृति के प्रति सम्मान का भाव पैदा कराना है। किन्तु वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था इस कार्य में अक्षम है।वैदिक शिक्षा जीवन की सम्पूर्णता का ज्ञान देती थी। भारतीय शिक्षा व्यवस्था की वर्तमान स्थिति को देखते हुए यह आवश्यक है कि हम पुनः अपने सांस्कृतिक तथा साहित्यिक स्त्रातों का अध्ययन करें उनमें से प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति में से शिक्षा के विभिन्न अंगो,

उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों आदि से सम्बन्धित तत्वों एवं सिद्धान्तों का चयन करें।

- **गुरूकुल शिक्षा पद्धति के विशिष्ट अंग**
- **ब्रह्मचर्य का कठोर पालन**
- **सादा जीवन तथा उच्च विचार**
- **विलासिता तथा सहवास के जीवन का परित्याग**
- **सात्विक भोजन का महत्वः**
- **मादक पदार्थो के सेवन से दूर रहनाः**

**शोध के उद्देश्यः–**प्रस्तुत शोध हेतु निम्न उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है–

1 गुरूकुल आश्रम व्यवस्था आधारित ऋषिकुल ब्रह्मचर्य आश्रमके शैक्षिक उद्देश्यों का अध्ययन करना।
2 ऋषिकुल ब्रह्मचर्य आश्रम की शैक्षिक उपयोगिता का अध्ययन करना।

**परिसीमनः–**

यह अध्ययन गुरूकुल आश्रम व्यवस्था आधारित ऋषिकुल ब्रह्मचर्य आश्रम, रतनगढ़, चुरू के अध्ययन तक सीमित है।

**न्यादर्शः–**

वर्तमान शोध के अन्तर्गत गुरूकुल आश्रम व्यवस्था आधारित राजस्थान में स्थित सम्पूर्ण संस्कृत विद्यालय शोध जनंसख्या के रूप में है। जिनमें से उद्देश्यीय/सौद्देश्य न्यादर्श चयन प्रविधि द्वारा गुरूकुल व्यवस्था आधारित ऋषिकुल बह्मचर्य आश्रम, चुरू चयन किया गया है

**शोध अध्ययन विधिः–**

प्रस्तुत शोध में संस्थागत सम्पूर्ण अध्ययन हेतु सर्वाधिक उपयुक्त वैयक्तिक अध्ययन विधि का चयन किया गया है।

**शोध उपकरणः–**

प्रस्तुत शोध के अध्ययन हेतु शोधकर्त्री द्वारा निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है–

1. अवलोंकन अनुसूची (स्वनिर्मित)
2. साक्षात्कार अनुसूची (अर्द्धसंरचित) छात्रों, अध्यापकों, प्रशासकों हेतु।
3. विद्यालय अभिलेख और दस्तावेज

**प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्याः–**

**उद्देश्य–1:** गुरूकुल आश्रम व्यवस्था आधारित ऋषिकुल ब्रह्मचर्य आश्रम के शैक्षिक उद्देश्यों का अध्ययन करना।

**तालिका संख्या 1**
**शैक्षिक उदेश्यों के अध्ययन हेतु साक्षात्कार प्रश्नावली**

| | |
|---|---|
| 1.1 | इस विद्यालय की स्थापना के पीछे मूल उदेश्य क्या हैं? |
| 1.2 | गुरूकुल आश्रम व्यवस्था से विद्यार्थी का आध्यात्मिक व आत्मिक विकास किस प्रकार संभव है? |
| 1.3 | क्या यहाँ पर संस्कृत भाषा के अध्ययन अध्यापन पर विशेष बल दिया जाता है? |
| 1.4 | क्या यहां पर प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों, वेदादि का भी अध्ययन करवाया जाता है? |
| 1.5 | क्या गुरूकुल प्रणाली विद्यार्थियों में समानता के भाव उत्पन्न कर ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना विकसित कर पाएगी? |

| 1.6 | क्या यहां पर भी प्राचीन काल भांति निशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है? |
|---|---|

## 1.1 श्री ऋषिकुल ब्रह्चर्याश्रम के शैक्षिक उदेश्य

–प्राचीन वैदिक धार्मिक व सांस्कृतिक ज्ञान की पुर्नस्थापना।
– संस्कृत भाषा का विशेष अध्ययन करवाना।
– प्राचीन गुरूकुल प्रणाली के अनुसार व्यवस्था अपनाना।
–निम्न या मध्यमवर्गीय परिवार के बालकों को शिक्षा प्रदान करना।
– सामान्य शिक्षा के साथ–साथ धार्मिक, पूजन, अनुष्ठान पद्धति का प्रशिक्षण देना।
– संस्कृत संभाषण व व्याकरण में कुशलता प्रदान करना।
– प्राचीन धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन श्रीमद्भागवतगीता को कण्ठस्थ कराना।

## 1.2 विद्यालय के दस आचार्यों के द्वारा यह बताया गया कि –

गुरूकुल आश्रम पद्धति के अनुसार जब एक बालक नियमित रूप से कई वर्षों तक अध्ययन करता है तो उस व्यवस्था की नियमित दिनचर्या व क्रियाकलाप उसके दैनिक जीवन के अंग बन जाते हैं। इस विद्यालय की अपनी अपनी निश्चित दिनचर्या है जो कि बालक को आध्यात्मिकता की ओर ले जाती है। बालक के आध्यात्मिक व आत्मिक विकास हेतु इन विद्यालयों में निम्न गतिविधियां संचालित की जाती है :–

– प्रातः व संध्या ईश वंदना
– सूर्योदय पूर्व शयन त्याग
– विभिन्न धार्मिक ग्रन्थों का पठन पाठन जैसे गीता, वेद आचार्यों गुरूओं द्वारा दिए गए सदूपदेश का पालन
– ओम का उच्चारण व योग से एकाग्रता का अभ्यास करना।
– नियमित रूप से योगाभ्यास कराना।
– प्रत्येक प्राणी के साथ प्रेम व दया के भाव रखने की शिक्षा ध्यान व मौन का अभ्यास करना।

**समालोचनात्मक विश्लेषण – इस प्रकार विद्यालय में करवायी जाने वाली विभिन्न गतिविधियां बालक के आत्मिक व आध्यात्मिक विकास में सहायक बन सकती है।**
**– आश्रम की सम्पूर्ण गतिविधियों का दत्त चित्त व नियमपूर्वक पालन करने से बालक के आत्मिक व आध्यात्मिक विकास किया जा सकता है।**

**1.3** विद्यालय के संस्था प्रधान ने बताया कि यहां पर संस्कृत भाषा का विशेष अध्ययन करवाया जाता है। प्रत्येक विद्यालय में संस्कृत के ग्रंथ वेद, उपनिषद, गीता आदि का अध्ययन करवाते हैं। विद्यालय में संस्कृत के विशिष्ट अध्ययन के फलस्वरूप की यहां के शिक्षकों व बालकों के द्वारा संस्कृत में ही धारा प्रवाह बातचीत की जाती है।

यह**मूलतः संस्कृत विद्यालय है। अतः यहां संस्कृत भाषा का विशेष अध्ययन होता है। यहां संस्कृत पाठ व मंत्रोच्चारण का तो विशेष अध्ययन होता है परन्तु संस्कृत व्याकरण के अध्ययन पर अपेक्षाकृत कम ही ध्यान दिया जाता है।**

**1.4** के अनुसार विद्यालय के 15 आचार्यों के द्वारा यह बताया गया कि प्राचीन आश्रम पद्धति आधारित इस विद्यालय में प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों व वेदादि का सामान्य पाठ्यक्रम के साथ विशेष रूप से अध्ययन करवाया जाता है। यहांविभिन्न प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन करवाया जाता है :– गीता,उपनिषद,शुक्लयजुर्वेद,पुराण

**समालोचनात्मक विश्लेषण :–इस विद्यालय में बालकों प्राचीन वेद, गीता, उपनिषद, रामायण, पुराण, ज्योतिषीय ग्रन्थों का अध्ययन करवाया जाता है जो कि हमारे वर्तमान विद्यालयी पाठ्यक्रम में से लुप्त होते जा रहे हैं।**

**1.5** विद्यालय के 10 आचार्यों ने बताया कि गुरूकुल आश्रम व्यवस्था मुख्यतः एक साथ समत्व की भावना के साथ मिलजुल कर रहने के भाव पर आधारित होती है। सभी बालक गुरूजनों के व सभी अन्य बालकों के साथ मिल जुलकर रहते हैं।परन्तु यहां ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य वर्ण के बालकों को ही प्रवेश दिया जाता है। शूद्र वर्ण के बालकों को नहीं।

**समालोचनात्मक विश्लेषण**

**यद्यपि प्राचीन गुरूकुल प्रणाली के अनुरूप इस विद्यालय में भी ब्राह्मण वर्ण के बालकों की ही अधिकता है। उच्च वर्ण तथा केवल ब्राह्मण वर्ण के बालकों को प्रवेश दिया जाता है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना का यहां पूर्णतः व्याप्त नहीं है।**

**1.6** के अनुसार विद्यालय के संस्था प्रधानों ने बताया कि प्राचीन गुरूकुल आश्रम व्यवस्था के अंतर्गत गुरूकुल में अध्ययनरत विद्यार्थियों से शिक्षण शुल्क नहीं लिया जाता था। शिक्षण बालकों के लिए निःशुल्क ही था। उसी प्रकार इस में भी शिक्षण व्यवस्था लगभग निशुल्क ही है।

**समालोचनात्मक विश्लेषण**

**इस विद्यालय की शुल्क व्यवस्था में अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है। यहां पर बालकों को शिक्षा अत्यल्पशुल्क या निःशुल्क ही प्रदान की जाती है।**

## उद्देश्य–2ऋषिकुल ब्रह्मचर्य आश्रम की शैक्षिक उपयोगिता का अध्ययन करना।

श्री ऋषिकुल बह्मचर्याश्रम में पूर्व अध्ययनरत छात्रों ने अपने यहां के अध्ययन अनुभव को सुखद व भावी जीवन में अत्यंत उपयोगी बताया। ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम के द्वारा 16–17 जून 2018 को प्रथम पूर्व स्नातक सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें इस संस्थान के अध्ययन कर चुके पूर्व छात्रों को आमन्त्रित कर सम्मानित किया गया इस कार्यक्रम में जहां पूर्व छात्रों ने यहां अपने संस्थान के अनुभवों को सभी के साथ साझा किए वहीं वर्तमान के छात्रों द्वारा विभिन्न गीत, संगीत, नाटक आदि प्रस्तुतियां दी गई। पूर्व स्नातक छात्र यहाँ पुनः आकर स्वयं को अभिभूत अनुभव कर रहे थे। शोधकर्त्री द्वारा स्वंय इस कार्यक्रम में उपस्थित होकर जानकारी ली गई।

**समालोचनात्मक विश्लेषणः– विद्यालय पारम्परिक संस्कृत भाषा के ज्ञान के साथ आधुनिक विषयों का ज्ञान तो देते है परन्तु उनका प्रयोग अत्यंत सीमित है। बालक विद्यालयी वातावरण से बाहर के वातावरण में भिन्नता अनुभव कर सकते है। बालक यहां से शिक्षा प्राप्त कर अधिकांशत आगे चलकर संस्कृत विषय का अध्ययन या अध्यापन के रूप में अपनाते है यहां के बालक आगे चलकर अपने सामान्य व्यवसाय के साथ–साथ पांडित्य के कार्य को अपने पूर्ण या आंशिक रूप में अपना सकते है।**

## शैक्षिक निहितार्थ

शोध अध्ययन के दौरान शोधकर्त्री ने यह पाया कि यदि हम यह चाहते है कि प्राचीन गुरूकुल प्रणाली को वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन लाने हेतु लागू किया जाना चाहिए इससे वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के दोषों को दूर करउसे नयी दिशा प्रदान की जा सकती है। तो इसके लिए वर्तमान में इन गुरूकुल आधारित विद्यालयों की प्रणाली को जानना व समझना होगा इन विद्यालयों के अध्ययन से निकले परिणामों से प्रशासनिक वर्ग अध्यापक वर्ग, शिक्षार्थी सभी लाभावित हो सकते है। इसके लिए इन विद्यालयों की वर्तमान सम्पूर्ण शैक्षिक व्यवस्था के साथ–साथ इनमें आधुनिक आवश्यकता के परिप्रेक्ष्य में अनेक सुधार कर इसे अधिक उपयोगी व ग्राह्य बनाया जा सकता है। इसके लिए प्रमुख सुझाव निम्नलिखित हैः–

## प्रशासनिक वर्ग हेतुः–

- विद्यालयों का स्वरूप पूर्णतः आवासीय होने से बालक पर अधिक ध्यान दिया जा सकता है।

- विद्यालय में वर्तमान आधुनिक विषयों का यथा कम्प्यूटर इंटरनेट, अंग्रेजी का भी प्रयोग किया जाए अन्यथा इन बालकों के पिछड़ जाने की संभावना बढ़ सकती है।
- इन विद्यालयों का बाहरी वातावरण व अन्य आधुनिक पद्धति से संचालित विद्यालयों व बालकों से सम्पर्क में वृद्धि की जाए।
- यहाँ पर केवल ब्राह्मण वर्ग के ही बालकों को प्रेवश दिए जाने के कारण अन्य वर्ग के बालक इस पद्धति से शिक्षण से वंचित रह जाते है। अतः सभी वर्गो के बालकों के प्रवेश दिए जाने की व्यवस्था करना।
- विद्यालयों को समाज से जोड़ने से इनकी सामाजिक उपादेयता मे वृद्धि की जा सकती है।

## अध्यापकों हेतुः–

- संस्कृत भाषा शिक्षण व पांडित्य प्रशिक्षण के साथ–साथ अन्य व्यवसायों के लिए उपयोगी विषयवस्तु व पाठ्यक्रम का अध्ययन करवाया जा सकता है।
- विद्यार्थियों के साथ मधुर व स्नेहपूर्ण संबंध शिक्षण प्रभावशीलता में वृद्धि करते है।

## छात्रों हेतुः–

- गुरूकुल प्रणाली में आवासीय व्यवस्था होने से विद्यार्थी पर अतिरिक्त ध्यान देकर उसका सर्वांगीर्ण विकास किया जा सकता है।
- वर्तमान पाठ्यक्रम के अतिरिक्त संस्कृत व्याकरण, वेद गीता, कर्मनांडीय क्रियाए, योग शिक्षा, सत्रोच्चारण अभ्यास आदि का विशेष अभ्यास करवाये जाने से इनमें विशिष्ट प्राप्त की जा सकती है।
- विद्यालयों की नियमित व अनुशासित दिनचर्या होने से उनके भावी जीवन में ये संस्कार रूप में दृढ़ होने से उनके सामाजिक, मानसिक व चारित्रिक रूप से युक्तव्यक्तित्व निर्माण में सहायक बन सकेंगे।
- वर्तमान शिक्षा की सबसे बड़ी कमी इसमें व्यवसायोन्मुखता का अभाव होना है। जो कि इस विद्यालय से अध्ययन करने वाले बालकों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते है। क्योंकि ये धार्मिक अनुष्ठानों व पांडित्य का प्रशिक्षण ले रहे है जिन्हे वे व्यवसाय के रूप में अपना सकते है।

## संदर्भ ग्रंथ सूची


- http:// www.gurukulmethod.com
- http:// www.gurukulearning.com
- http:// www.casestudy.com
- http:// www.casestudyformat.com
- शर्मा, एस.एन. भार्गव, विवेक–मनोविज्ञान एवं शिक्षा में प्रयोग परीक्षण, एच.पी. भार्गव, बुक हाउस (2006–07)
- शर्मा, गंगाराम भार्गव, विवेक शर्मा, मुकेश शिक्षा मनोविज्ञान, एच.पी. भार्गव बुक हाउस
- त्रिपाठी लाल बच्चनः–मनोविज्ञान अनुसंधान पद्धतियाँ, ए.पी. भार्गव बुक हाऊस, आगरा 2006 ।
- पाण्डेय कल्पलता, श्रीवास्तव एस.एस. शिक्षा मनोविज्ञान एच.पी. भार्गव, बुक हाउस
- पाठक पी.डी. शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन
- विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित साहित्य एवं पत्रिकायें
- विद्यापीठ अभिलेख